**E-ISSN:** 2706-9117
**P-ISSN:** 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2025; 7(10): 44-48
Received: 06-09-2023
Accepted: 03-10-2023

**सुषमा सिंह**
शोध छात्रा, इतिहास विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत

**Corresponding Author:**
**सुषमा सिंह**
शोध छात्रा, इतिहास विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत

# भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिला प्रतिरोध

## सुषमा सिंह

**DOI:** https://www.doi.org/10.22271/27069109.2025.v7.i10a.535

**सारांश**
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन केवल औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध एक राजनीतिक संघर्ष नहीं था, बल्कि यह एक सामाजिक क्रांति भी थी, जिसमें भारतीय महिलाओं की सक्रिय भागीदारी और त्याग देखने को मिला। ऐतिहासिक रूप से महिलाएं घरेलू सीमाओं में बंधी थीं, किंतु स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान उन्होंने परिवर्तन की सशक्त प्रतिनिधि के रूप में उभर कर देश की दिशा बदल दी। प्रस्तुत अध्ययन 1857 से 1947 तक के कालखंड में राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका और उनके प्रतिरोध का विश्लेषण करता है। इस शोध का उद्देश्य विभिन्न आंदोलनों में महिलाओं के योगदान को उजागर करना तथा उनके सामाजिक और राजनीतिक रूपांतरण को समझना है। अनुसंधान पद्धति के रूप में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसमें राजकीय अभिलेख, गजेटियर, सरकारी रिपोर्टें तथा द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन किया गया है। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, एनी बेसेंट, सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी और अरुणा आसफ अली जैसी अनेक महिलाओं ने न केवल आंदोलनों का नेतृत्व किया बल्कि हजारों अन्य महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ने की प्रेरणा दी। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी ने उनके राजनीतिक चेतना और सामाजिक मुक्ति की नींव रखी। उनका साहस, नेतृत्व और बलिदान स्वतंत्र भारत में महिला सशक्तिकरण और समानता के युग का प्रारंभ बिंदु बना। यह ऐतिहासिक तथ्य इस बात को रेखांकित करता है कि भारत की स्वतंत्रता महिलाओं के पराक्रम से भी उतनी ही प्रेरित थी जितनी पुरुषों की रणनीति से।

**मुख्य शब्दः** महिला भागीदारी, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, स्वतंत्रता संग्राम, लैंगिक समानता, सामाजिक सुधार, राजनीतिक चेतना, स्वतंत्रता, महिला सशक्तिकरण

## प्रस्तावना
विगत दो–तीन दशकों में समाज की आधी आबादी अर्थात् महिलाओं से संबंधित विभिन्न पक्षों के अध्ययन पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। देश के स्वाधिनता संग्राम में महिलाओं की भूमिका भी स्त्री–अध्ययन का एक ऐसा ही पक्ष है जिस पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। उदाहरणस्वरूप 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वालों के परिवारों की महिलाओं पर क्या बिता, इसका कोई विवरण नहीं मिलता है। इस प्रथम विद्रोह ने भारत में राष्ट्रभक्ति के बिज बोये थे, जो धीरे–धीरे अंकुरित होता गया और अंततः 1947 में आजादी के रूप में इसका फल प्राप्त हुआ।
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में भारत के महिलाओं की भी महत्वपूर्ण सहभागिता रही और समय–समय पर उन्होंने अपने दायित्वों का बखूबी निर्वहन भी किया, किन्तु उनके विषय में बहुत कम अध्ययन हुआ है। कुछ प्रमुख महिला देशभक्तों के नाम अवश्य उजागर हुए हैं पर अधिकांश नाम गुमनाम रह गए हैं। प्रसिद्ध विचारक मार्क ट्वेन के शब्दों में ''भारत इतिहास की माँ है, किंवदंतियों की दादी माँ और परम्परा की महादादी माँ और क्रान्ति की है आदि जननी।''
किसी देश के निरंतर विकास का कारण और संचालक, उसकी मुख्य उत्प्रेरक क्रान्ति होती है। यही निरंतर विकास अपनी सारी किंवदंतियों एवं परंपराओं के साथ समस्त इतिहास को अमूल्य कोष में समाहित करके आगे बढ़ता है। भारत एक ओर सभ्यता एवं संस्कृति का उद्गम स्थल रहा है वही दूसरी ओर यह क्रांन्ति एवं प्रतिरोध का भी देश रहा है।[2]
1857 के विद्रोह के प्रमुख नेतृत्वकर्त्ताओं में भारतीय इतिहास की महान विरांगना थीं–झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई। जब अंग्रेजों ने रानी के गोद लिए दत्तक पुत्र को झाँसी की गद्दी का वारिस मानने से इनकार करके उनके राज्य को हड़प लिया और साथ ही, किसी भी तरह के विद्रोह भड़कने की स्थिति में यह धमकी रानी को दी गई कि इसका उत्तरदायी रानी को माना जाएगा तब रानी ने

विद्रोहियो का साथ देने का निश्चय कर लिया और बहादुरी के साथ अपने सैन्य नेतृत्व को संभाल। तात्या टोपे की सहायता से उन्होंने ग्वालियर पर कब्जा कर लिया। अंग्रेजो से युद्ध करते हुए यह विरांगना अंततः 17 जून 1858 को वीरगति को प्राप्त हुई।

लखनऊ से 1857 के विद्रोह का नेतृत्व अवध की रानी हजरत महल ने सँभाला। उन्होंने अपने नाबालिग बेटे बिरजिस कदर को अवध का नवाब घोषित करके सिपाहियों, किसानों एवं जमींदारों की सहायता से अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध आरम्भ कर दिया। अंग्रेजों को शहर छोड़ने पर मजबूर करके उन्होंने रेजीडेंसी की इमारत में शरण ली जिसका घेरा कामयाब नहीं हो सका।[3]

उन्नीसवीं सदी के मानवतावादी एवं समानतावादी समाज सुधारकों ने स्त्रियों की स्थिति सुधारने हेतु एक आंदोलन प्रारंभ किया। जिसमें कुछ ने व्यक्तिवाद एवं समानता के सिद्धांतों का सहारा लिया तो कुछ ने यह घोषणा की कि सच्चा धर्म स्त्रियों को ऊँचा सामाजिक दर्जा देता है।

अनेकों व्यक्तियों, समाज सुधारकों एवं धार्मिक संगठनों ने महिलाओं में शिक्षा का प्रचार–प्रसार करने, विधवाओं की दशा सुधारने एवं उनके पुनर्विवाह को प्रोत्साहन देने, बाल–विवाह रोकने, स्त्रियों को पर्दे से बाहर लाने, एक पत्नी प्रथा को प्रचलन में लाने एवं मध्यवर्ग की स्त्रियों को सरकारी रोजगार में जाने एवं व्यवसाय के योग्य बनाने के लिए कड़ी मेहनत की।

बीसवीं सदी में राष्ट्रीय आंदोलन के उदय से स्त्री–मुक्ति आंदोलन को बहुत बढ़ावा मिला। स्वतंत्रता संघर्ष में स्त्रियों ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। बंग–भंग विरोधी आंदोलन एवं होमरूल आंदोलन में स्त्रियों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। 1918 के बाद वे राजनीतिक जुलूसों में भी शामिल होने लगीं, विदेशी वस्त्रों को होली जलाने लगीं, शराब की दुकानों पर धरने देने लगी तथा खादी की बुनाई एवं उसका प्रचार–प्रसार भी करने लगी।[4]

एनी बेसेन्ट ने थियोसोफिकल सोसाइटी के द्वारा हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता की घोषणा करके हिन्दू समाज को नवीन शक्ति एवं हिन्दू आदर्शों के प्रति भक्ति भावना एवं त्याग को देशभक्ति एवं मातृभूमि के प्रति भक्ति–भावना में उत्प्रेरित किया।[5]

महारानी लक्ष्मीबाई की भतीजी तपस्विनी सुनन्दा जिन्हें 1857 के महाविद्रोह में भाग लेने के कारण त्रिचनापल्ली के जेल में बंद कर दिया गया था, जेल से निकलने के बाद इन्होंने बंगाल में संस्कृत पाठशाला की स्थापना करके स्त्री शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया।[6]

रविन्द्र नाथ टैगोर की बहन स्वर्ण कुमारी देवी ने भी प्रसिद्ध बंगाली पत्रिका 'वामा–वेदिनी' का संचालन करके पहली भारतीय महिला प्रकाशक बनीं।[7]

1886 में महिलाओं के विकास के लिए इन्होंने 'लेडीज एसोसिएशन' की स्थापना की और बंगाल थियोसोफिकल सोसाइटी की प्रथम महिला विभागाध्यक्ष भी बनीं। बंगाल की स्त्रियों की दशा में सुधार लाने हेतु इन्होने कई महत्वपूर्ण प्रयास किए।[8]

पंडिता रमाबाई रानाडे ने पूना में 'सेवा–सदन' की स्थापना करके बॉम्बे में इसकी अनेक शाखाएँ खोली जिसमें उच्च जाति की विधवाओं को काम करने एवं अस्पताल में काम करने का प्रशिक्षण भी दिया जाता था।[9]

1895 में स्वामी विवेकानंद के सम्पर्क में आने के बाद मारग्रेट नोबल जिन्हें भारत में सिस्टर निवेदिता के नाम से जाना गया। उन्होंने भी विवेकानंद के सुझाव पर लन्दन से भारत आकर कलकत्ता को अपनी कर्म–भूमि बनाया और महिलाओं के उत्थान एवं जागरण में प्रमुख भूमिका निभाई। सरला देवी से प्रभावित होकर इन्होंने स्वदेशी आंदोलन के समय राष्ट्रीय कला, साहित्य, शिक्षा, संस्कृति, इतिहास आदि के उत्थान हेतू अभूतपूर्व कार्य किया। रविन्द्रनाथ टैगोर की भांजी सरला देवी ने भी अपने कार्यो से अन्य महिलाओं को स्वदेशी एवं स्वतंत्रता की नई राह दिखाई। इनका अधिकांश समय परिचमी भारत में 'गणपति महोत्सव,' शिवाजी महोत्सव, चापेकर बन्धुओं तथा चितपावन ब्राह्मण द्वारा प्रयोजित शारीरिकि एवं सैनिक प्रशिक्षण केन्द्र में बिता। लाहौर में सरला देवी ने वन्दे मातरम् को राष्ट्रीय नारे के रूप में प्रयोग में लाने के लिए प्रयास किया।[10]

1925–26 के आरंभ में 'विमेन इण्डिया एसोसिएशन' की संस्थापक सचिव एवं स्त्री–धर्म पत्रिका की सम्पादक 'मारग्रेट कुजिंस' ने एक पत्र लिखा जिसे अनेक महिला संगठनों एवं प्रमुख राष्ट्रवादियों को भेजा गया। इस पत्र में देश की सभी महिलाओ को 'नारी शिक्षा' के विषय पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित किया गया। महिलाओं के लिए यह आवश्यक था कि बालिकाओं को दी जाने वाली वर्त्तमान शिक्षा पर अपना विचार रखें। साथ ही इनके द्वारा यह सुझाव दिया गया कि इस विषय में स्त्रियों के विचार जानने के लिए पत्र लेखन ही उपयुक्त रास्ता है। क्योंकि जहाँ तक लड़कियों की शिक्षा से जुड़ी समस्याओं की बात है तो यह अलग–अलग प्रान्तों एवं आबादियों में अलग–अलग है। इसके लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक जिले में महिलाओं का एक सम्मेलन हो जो अखिल भारतीय स्तर पर अपना प्रतिनिधि भेजकर राय रख सके और इस सम्मेलन से 40 या उससे अधिक महिलाएँ शिक्षा में सुधार पर एक मेमोंरेडम तैयार करके भारतीय शैक्षणिक प्राधिकरणों को भेजे।[11]

पार्वती देवी जो कि 1920 में प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की सदस्य चुनी गई थीं, इन्होंने कांग्रेस के रावलपिण्डी के अधिवेशन में जोशीला भाषण दिया जिसको सुनकर लाला लाजपत राय ने इनसे लाहौर आने का आग्रह किया और इस तरह पंजाब इनकी कर्म–भूमि बन गया। सख्त भाषण देने पर लाल लाजपत राय ने इन्हें समझाया तो इन्होंने उत्तर दिया ''जब हम आजादी के लिए कार्य कर रहे हैं, तो पुलिस से क्या डरना।'' पंडित मदन मोहन मालवीय ने इनके बारे में कहा – ''यदि आप अपने जैसी दस हजार स्त्रियाँ तैयार कर ले तो स्वराज अपने आप मिल जाएगा।'' ये जहाँ भी जाती विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना देने वाली स्त्रियों का दल तैयार करती।[12]

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद 35 सालों तक यूरोप की विभिन्न राजधानियों– लंदन, पेरिस, जेनेवा, वियना, बर्लिन में एक पारसी महिला की वाणी पूरी प्रखरता से गुंजायमान थीं और भारत के स्वतंत्रता के लिए विश्व–जनमत को तैयार करके इंग्लैण्ड के साम्राज्यवादियों को आशंका से दहलाती रहीं यह वाणी मैडम भीकाजी कामा की थी। जो कालांतर में वीर सावरकर, हरदयाल, श्याम जी कृष्ण वर्मा जैसे महान क्रांतिकारियों के लिए प्रेरणास्त्रोंत बन गईं थी।[13]

मेडलीन स्लेड (मीरा बेन) इंग्लैण्ड से भारत अध्यात्म में अपनी विशेष रूचि की वजह से और गाँधी जी की शिष्या बनने की अपनी अभिलाषा की वजह से आईं। भारत आने के बाद स्वतंत्रता संग्राम में भी बापू के साथ उनके हरेक कार्य में सहयोगी रहीं। गाँधी जी की विचारधारा को विदेशों में फैलाने का कार्य भी उन्होंने किया। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भी वह गाँधीजी के साथ इंग्लैण्ड गईं थीं। आजादी की लड़ाई के दौरान कई बार जेल भी गई। बाद में वह ग्रामीण कल्याण कार्यक्रमों की ओर मुड़ गईं।[14]

असहयोग आंदोलन के दौरान महिलाएँ जेल भी गई एवं जन–प्रदर्शनों में लाठी, आँसू–गैस और गोलियाँ भी झेली। क्रांतिकारी आंदोलनों में भी उन्होने सक्रिय भागीदारी निभाई।[15]

1921 में गाँधीजी ने अपने लेख के माध्यम से देश की सभी महिलाओं का आहवान किया कि वे आगे बढ़कर आंदोलन में भाग ले और इसे सफल बनाएँ। इसके प्रतिक्रिया स्वरूप हजारों की संख्या में महिलाएँ घरो से निकलकर चरखे व खादी का प्रचार करने लगीं।

बंगाल में वासंती देवी (देशबंधु चित्तरंजन दास की पत्नी) और उर्मिला देवी (देशबंधु की बहन) ने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार एवं

खद्दर बेचने के लिए व्यापक योजनाओं का निर्माण किया और गैर कानूनी सभा करते हुए गिरफ्तार हो गई। इस गिरफ्तारी में अन्य महिलाएँ जिसमें कि श्रीमती अनुकूल मित्तल, सत्यादेवी, हेमप्रभा मजूमदार आदि भी उनके साथ थी। इस दौरान आंदोलन में भाग लेने व दुकानों पर धरना–प्रदर्शन करते हुए गिरफ्तार होकर जेल जाने वाली बंगाल की कुछ अन्य प्रमुख महिलायें निम्न थीः– मोहिनी देवी, सुशीला मित्रा, चारूशिला देवी, नेली सेन गुप्त, आशालता सेन, प्रभा चटर्जी, आदि। 1922 में चटगांव के बंगाल प्रांतीय कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए वासंती देवी ने महिलाओं को कुर्बानियाँ देने के लिए प्रेरित करते हुए कहा, ''आजादी देर–सबेर मिलनी ही है पर उसे धिमी गति से किस्तों में प्राप्त करने की नीति अपना कर अनावश्यक देरी क्यों की जाए। तकलीफ सहने और कुर्बानियाँ देने से ही हम उसे जल्दी प्राप्त कर लेंगे।'' इसी समय क्रांतिकारी भूपेन्द्रनाथ की गिरफ्तारी का विरोध करने के लिए दो सौ महिलाओं ने सभा की ओर भूपेन्द्रनाथ की माँ का सम्मान किया। वही शहीद खुदीराम बोस की माँ का सम्मान करने के लिए भी एक भारी महिला सभा एकत्रीत हो गई थी।

कलकत्ता में महिलाओं ने 25–30 की संख्या में इकट्ठा होकर यत्र–तत्र सभाएँ की। इन महिलाओं का नेतृत्व करनेवाली स्त्रियों में प्रमुख थी इंद्रप्रभा मजूमदार एवं राधू बीबी। महिलाओं में सत्याग्रह हेतु धन इकट्ठा करने और आभूषणो को दान करने की जैसे होड़ लगी हुई थी। गुवाहाटी में वालंटियर के तौर पर 60 महिलाओं ने नाम लिखवाए जो गाँवों में पैदल घुम–घुमकर प्रचार करतीं और शहरों में धरने देती थीं। उड़िसा में आंदोलन की नेतृत्वकर्त्ता रमा देवी थीं।

कस्तुरबा गाँधी ने सत्याग्रह का प्रशिक्षण दक्षिण अफ्रिका में ही ले लिया था। भारत आने के बाद उन्होने गुजरात में प्रांतीय कांग्रेस अधिवेशन का नेतृत्व सँभाला तथा गुजरात का इसके बाहर दौरा करके आंदोलन का प्रचार–प्रसार किया। छुआ–छूत के विरूद्ध एवं विदेशी वस्तुओं के खिलाफ जनता को जागृत करने का उन्होंने अथक प्रयास किा। एक सभा में उन्होने कहा, ''मेरे केवल दो पुत्र ही जेल में नहीं है, बीस हजार अन्य भारत माता के सपूत भी तो इस समय जेल में है। हमें उनके लक्ष्य को समर्थन देकर आंदोलन को सफल बनाना है।''

गुजरात, (तब बंबई प्रांत का एक भाग था) वहाँ कस्तूरबा के साथ अनेक महिला कार्यकर्त्ता भी सक्रिय थीं जिनमें प्रमुख थीः– श्रीमती डाही बहन, रावजी भाई पटेल। जिन्होंने कस्तूरबा के साथ 1920 में अहमदाबाद, जलालपुर, आवंद मातर, नाड़ियाद व बोरसद में 'नमक करबंदी सत्याग्रह' में भाग लिया तथा स्वदेशी प्रचार एवं विदेशी बहिष्कार आंदोलन चलाया। 12 साल की महिला श्रीमती दंडा बहन जगा भाई चौधरी जिन्होंने छात्राओं का जुलूस निकाला और बहिष्कार आंदोलन के अंतर्गत दुकानों पर धरने दिए। गोपाल दास देसाई ने अपनी सरकारी नौकरी से त्याग पत्र देकर अपनी पत्नी श्रीमती भक्तलक्ष्मी (भक्तिबा) के साथ सत्याग्रह में असहयोग आंदोलन के दौरान भाग लिया। 1921 के कांग्रेस के अधिवेशन में भी दोनों पति–पत्नी शामिल हुए थे। कुमारी मीठू बहन होरमसजी पैट्रीट जीनके माता–पिता दोनों गाँधीजी के शिष्य थे। गाँधीजी के प्रभाव में आकर मिठू बहन जो कि बंबई की पारसी महिला थीं प्रांरभ से ही गाँधीजी के साथ उनके दौरों में शामिल रहीं। उन्होंने स्त्री सभाओं में भाषण दिए और घर–घर जाकर खादी का प्रचार किया। उन्हें बंबई की राष्ट्रीय स्त्री–सभा के खादी विभाग का मंत्री भी बना दिया गया था। मणिबेन शिवाभाई पटेल ने स्वदेशी प्रचार के साथ–साथ कांग्रेस–अधिवेशन में कार्य किया और लड़कियों के सेवादल का गठन करके सत्याग्रह भी किया। श्रीमती मणीबेन नरहरि पारीख भी गाँधीजी के भारत लौटने के बाद से ही अपने पति के साथ अपना घर–बार त्याग करके गाँधीजी के आश्रम आ गईं थीं। उन्होंने कस्तूरबा के सहायक के रूप में भी कार्य किया चंपारण आंदोलन के समय बिहार जाकर उन्होंने वहाँ भी महिलाओं को जागृत किया। श्रीमती विजय गौरी (नंदू बहन) बलवंत राय कानूनगो भी प्रत्येक सत्याग्रह में गाँधी दंपति के साथ थी। गाँधीजी का प्रेरणा से 1920 में उन्होंने चरखा वर्ग की स्थापना की। 1921 में राष्ट्रीय मंडल खादी की प्रमुख बनी। 1921 के कांग्रेस के अधिवेशन में स्वयंसेविकाओं की नेता बनकर उन्होंने अहमदाबाद का प्रतिनिधित्व किया। विदेशी कपड़ों की होली जलाना हो, धरना देना हो, या फंड इकट्ठा करना हो प्रत्येक क्षेत्र में वे आगे–आगे रहीं। श्रीमती नर्मदा बेन भट्ट एवं उनके पति रन्ततू प्रसाद भट्ट दोनों ने ही साथ–साथ आंदोलन का नेतृत्व किया एवं जेल भी गए। श्रीमती सरला देवी साराभाई जिनका घर अधिकांश नेताओं के लिए ठहरने का स्थान था गाँधीजी की प्रत्येक गतिविधि में उनके साथ थीं। उनकी पुत्री मृदुला साराभाई भी अल्पायु में ही स्वयंसेविका संगठन से जुड़ गई थीं। इस प्रकार हम देखते हैं कि गुजरात एवं बंबई की महिलाओ ने असहयोग आंदोलन में काफी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया।[16]

प्रसिद्ध कवियत्री सरोजिनी नायडू 1925 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कानपुर अधिवेशन में अध्यक्ष बनीं। अनेक स्त्रियाँ 1937 में बनी जनप्रिय सरकारो में मंत्री या संसदीय सचिव बनीं। उनमें से सैकड़ों नगरपालिकाओं या स्थानीय शांसन की दूसरी संस्थाओं की सदस्या भी बनी।

1920 के दशक तक प्रबुद्ध पुरूष ही महिलाओं की स्थिति मे सुधार के कार्य करते रहे लेकिन अब स्त्रियाँ आत्मविश्वास एवं आत्मचेतना प्राप्त करके स्वयं इस कार्य में आगे आने लगीं और उन्होंने इस उद्देश्य की पूर्ती हेतु अनेक संस्थाओं एवं संगठनों की स्थापना भी की जिसमें सबसे प्रमुख संगठन था– 1927 में स्थापित ऑल इण्डिया विमेन्स कॉन्फ्रेन्स।[17]

संपूर्ण देश की लाखों महिलाओं ने नमक सत्याग्रह में शामिल होकर नमक बनाना एवं नमक कानून को तोड़ना शुरू किया। वास्तवीक तौर पर इसी राष्ट्रवादी आंदोलन में बड़े पैमाने पर महिलाओं की सहभागिता दिखाई पड़ी। नमक सत्याग्रह को भारतीय स्वाधिनता संघर्ष में पहली बार भारतीय स्त्रियों की व्यापक सहभागिता के रूप में याद किया जाता है। अनेक राष्ट्रभक्त महिलाओं पर इसके प्रभाव को रेखांकित करते हुए नमक सत्याग्रह के पहले दिन कमला देवी चाटोपाध्याय ने कहा, ''हलांकि नमक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए कुछ ही महिलाओं का औपचारिक चयन हुआ है, परंतु इसके माध्यम से भारतीय क्रांति ने 6 अप्रैल, 1930 की सुबह पहली अंगड़ाई ली है। जो कि शाम ढलते–ढलते संपूर्ण देश में एक विशाल आंदोलन के रूप में फैल गई है।'' इस यादगार दिन हजारो की संख्या में महिलाये गर्व से भरे हुए सैनिकों की भाँति लंबे कदमों से समुद्र में उतर पड़ीं। लेकिन उनके हाथ में हथियार की जगह मिट्टी, तांबे व पीतल की गगरियाँ एवं तन पर वर्दी की जगह साधारण भारतीय साड़ी थी। हजारों युवतीयाँ एवं वृद्ध, अमीर एवं गरीब महिलाएँ अपने सामाजिक बेड़ियों को दरकिनार करते हुए नमक सत्याग्रह में एक साथ शामिल हो गईं।[18]

बिना किसी डर व घबराहट के विरतापूर्वक वे नमक के छोटे–छोटे पैकेटों को लेकर जोर से चिल्लाकर कहतीं, ''हमने नमक कानून तोड़ दिया है और अब हम आजाद हैं। है! कोई आजादी का नमक खरीदने वाला?'' उनके आस–पास से गुजरने वाले लोग रूक कर उनेक हाथ से पुड़िया लेकर बदले में सिक्का देकर आगे बढ़ जाते थे।[19]

महिलाओं का झुकाव जैसे–जैसे राष्ट्रवाद के प्रति होता गया उनका रूझान खेतों में काम करने वाली स्त्रियों की ओर होता गया। गाँधी जी ने भी 1920 के दशक के अंत में स्त्रियों को सम्बोधित करते हुए कहा ''पश्चिमी सभ्यता की ऊँचाईयों से उतर कर भारत के मैदानों में आओ, क्योंकि यह प्रश्न भारत की आजादी, स्त्रियों की आजादी, अस्पृश्यता के खात्मे तथा आम लोगों की आर्थिक दशा सुधारने से जुड़ा हुआ है। अपने आप को

गाँवों से जोड़ो, ग्रामीण जीवन का सुधार करने के बजाय उसका पुनर्निमाण करो।''[20]

महिलाओं को इन गतिविधियों में सम्मिलित होने हेतु प्रेरित करने और उनके बीच समन्वय स्थापित करने हेतु स्त्रियों के अलग संगठन तैयार किए गए। जिनमें निम्न संगठन शामिल थेः– देश सेविका संघ, नारी सत्याग्रह समिति, महिला राष्ट्रीय संघ, लेडीज पिकेटिंग बोर्ड, स्त्री स्वराज्य संघ तथा स्वयंसेविका संघ।[21]

## बिहार से स्वतंत्रता आंदोलन में स्त्री प्रतिरोध के कुछ प्रमुख स्वर

बाई अमन जिनका विवाह उत्तर प्रदेश में हुआ था लेकिन जिनकी कार्यस्थली बिहार ही रही। उन्हें लोग बी0 अमन, बी0 अम्माँ, बेगम साहिबा, अमानी बानों बेगम तथा अमीना बानों जैसे अनेक नामों से बुलाते थे। ये प्रमुख राष्ट्रवादी मुहम्मद अली व शौकत अली की माँ थीं। बी0 अमन का पूरा परिवार आजादी की जंग में शामिल था।[22]

बाई अमन 1920 के खिलाफत एवं प्रथम असहयोग आंदोलन में भी अत्यधिक सक्रिय थीं। अली बंधुओं की गिरफ्तारी के समय इन्होंने अपना पर्दा उतारकर महिलाओं की सभा को संबोधित किया। इससे पूर्व भी वे महिला संस्थानों के माध्यम से मुस्लिम महिलाओं में जागृति लाने का प्रयास कर रहीं थीं। इसीलिए महिला मताधिकार की मांग को लेकर भारत के मंत्री एंव वायसराय से मिलने वाले प्रतिनिधि–मंडल में भी उन्हें आमंत्रित किया गया था।[23]

प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी जयप्रकाश नारायण की पत्नी प्रभावती देवी को 1940 के रामगढ़ कांग्रेस में स्वयंसेविका दल का प्रमुख बनाया गया और उन्होंने पूरे समर्पण के साथ स्वयंसेविकाओं की भर्ती एवं प्रशिक्षणण कार्य किया। उन्हीं के प्रयासों से 26 जून 1940 को पटना में 'बिहार महिला चरखा क्लास' नाम संस्था की स्थापना हुई। 1941 में इसकी शाखाये गया, हजारीबाग तथा बेतिया जिले में खोली गयीं। अगस्त 1942 में प्रभावती जी के नेतृत्व में चर्खा क्लास के द्वारा दो सौ महिलाओं का जुलुस पटना सेक्रेटैरियट पर तिरंगा फहराने के लिए निकाला गया। 1946 में भी उनके नेतृत्व में चर्खा क्लास की ओर से अस्पताल में भर्ती दंगा पिड़ितों की सेवा की गई।[24]

20 नवम्बर 1931 को हिन्दुस्तानी सेवा दल के संगठन के संबंध में कमला देवी चट्टोपाध्याय के अध्यक्षता में हुए आम सभा में रामतनुक देवी ने पर्दा प्रथा के कुप्रभावों पर प्रकाश डाला और सभी स्त्री श्रोताओं से आग्रह किया कि वे अपने आपको महज घर तक ही समिति ना रखे बल्कि स्वतंत्रता संग्राम में भी अपनी उपयुक्त भूमिका का निर्वाह करें। रामतनुक देवी को बिहार प्रदेश कांग्रेस समिति की महिला शाखा की प्रादेशिक संगठिका के रूप में नियुक्त किया गया जिसके तहत उन्होंने पूरे प्रदेश का दौरा किया तथा कांग्रेस के कार्यों के लिए महिला स्वयंसेविकाओं को संगठित करने में अहम भूमिका निभाई।[25]

कामाख्या देवी ने बिहार में पर्दा प्रथा के विरूद्ध आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही कांग्रेस के असहयोग आंदोलन के दौरान रचनात्मक कार्यक्रमों के तहत धरना व खादी के प्रचार प्रसार के लिए लगातार प्रयासरत रहीं। 1932 के सत्याग्रह में संगठित महिलाओं के जुलूस का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तारी दी और छः महीने तक कठोर कारावास की सजा हाजीपुर सेन्ट्रल जेल में काटी।[26]

कांग्रेस की ओर से 1935 में बिहार विधान सभा में पटना क्षेत्र की विधायिका चुनी गई और इस तरह से वे बिहार की प्रथम विधायिका थीं। 1942 के भारत छोड़ों आन्दोलन में शामिल स्वतंत्रता के सिपाहियों की मदद करने को वे सदैव तत्पर रहतीं थीं। उनके पति नवल प्रसाद भी गाँधीजी के अनुयायी थे।[27]

विन्ध्वासिनी देवी का कराची, अहमदाबाद, नागपुर कांग्रेस अधिवेशनों में 'भारतीय कांग्रेस' कमेटी के सदस्या के रूप में प्रमुख स्थान था। कांग्रेस के नमक सत्याग्रह में भाग लेने के कारण इन्हे गिरफ्तार करके भागलपुर सेन्ट्रल जेल में छः महीने तक रखा गया। कांग्रेस स्वयंसेविका दल के गैर कानूनी घोषित होने पर पुनः अपने दल समेत हजारीबाग जेल गयीं। जवाहरलाल नेहरू के काशी आगमन पर महिलाओं के भव्य जुलूस का नेतृत्व कर उनका स्वागत किया।[28]

## निष्कर्ष

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं का प्रतिरोध निश्चित रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण एंव प्रेरणादायक था।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रारंभिक चरणों में हजरत महल एवं झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। जिन्होंने 1857 के विद्रोह में अंग्रेजो के दाँत खट्टे कर दिए थे।

भारतीय राजनीति में महात्मा गाँधी के आगमन के पश्चात् स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि देखी गई और उन्होंने बापू के रचनात्मक कार्यक्रमों को पूरे तौर पर आत्मसात कर लिया।

महिलाओं के राजनीतिक एवं सामाजिक प्रगति हेतु आधुनिक भारत के धर्म एवं समाज सुधारकों एवं राष्ट्रवादियों द्वारा भी उल्लेखनीय प्रयास किए गए।

सर्वविदित है कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रारंभ से लेकर भारत की स्वतंत्रता प्राप्ती तक के लंबे सफर में विभिन्न राजनीतिक कार्यक्रमों से जुड़कर विभिन्न महिलाओं ने भी पुरूषों के कंधे–से–कंधा मिला कर अपनी सहभागिता निभाई। परिवार में एवं परिवार के बाहर सदैव उनके कार्यों एवं योगदान को पुरूषों से कमतर ही आंका गया इसके बावजूद तमामतर कष्टों को झेलकर भी उन्होंने स्वाधिनता संग्राम के प्रत्येक क्षेत्र में अपना अमिट छाप छोड़ा।

## संदर्भ


1. डॉ0 श्वेता, *'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं महिलाएँ'* (1920–1950), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ0 9–10.
2. बलबीर सक्सेना, *भारत की क्रान्तिकारी महिलाएँ,* नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृ0 7–8.
3. विपिन चंद्र, *आधुनिक भारत का इतिहास,* ओरियंट ब्लैकस्वान, हैदराबाद (तेलांगना), 2016, पृ0 142–143.
4. वही, पृ0 233.
5. एनी बेसेन्ट; *इण्डिया ए नेशन,* मद्रास, 1925, पृ0 89.
6. मनमोहन कौर, *रोल ऑफ वूमेन इन दी फ्रीडम मूवमेन्ट,* (1857–1947), दिल्ली, 1968, पृ0 85.
7. वही, पृ0 89.
8. पद्मिनी सेनगुप्त, *पायनियर वूमेन ऑफ इण्डिया,* नई दिल्ली, 1944, पृ0 90.
9. ई0 सी0 गेज और एम0 चोक्सी, *वूमेन इन मॉडर्न इण्डिया,* बम्बई 1929, पृ0 226.
10. डॉ0 श्वेता, पूर्वोक्त, पृ0 48–49.
11. लोतिका घोष, *व्हाईट डाउन्स ऑफ अवेकनिंग,* पैकर स्पिंक, कलकत्ता, 1950, पृ0 158–159.
12. प्रभा, जनवरी, 1923, पृ0 75.
13. आशारानी व्होरा, *महिलाएँ और स्वराज्य,* स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका (1757–1950), प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 1988, पृ0 258.
14. वही, पृ0 226–228.
15. विपिन चंद्र, पूर्वोक्त, पृ0 233.
16. आशारानी व्होरा, पूर्वोक्त, पृ0 146–148.
17. विपिन चंद्र, पूर्वोक्त, पृ0 234.
18. राधा कुमार *स्त्री संघर्ष का इतिहास,* (1800–1950), वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2002, पृ0 163–165.

19. कमला देवी चट्टोपाध्याय, *'इंटव्यू' एनएमएमएल,* ओरल हिस्ट्री सैक्शन, पृ0 72–73.
20. 'गाँधी आन वीमेन' विषय पर मधु किश्वर का लिखा हुआ आलेख जिसेग *'रीडिंग इन दि विमेंस मूवमेंट–1'* गोष्ठी में बंबई में साइक्लोस्टाइल करके बॉटा गया, पृ0 8.
21. आर0 के0 शर्मा 'नेशनलिज्म, *सोशल रिफॉर्म एण्ड वूमन,* दिल्ली, पृ0 67.
22. अमरेन्द्र कुमार; ''अमीना बानो बेगम'' विजय कुमार द्वारा सम्पादित, *बिहार के विकास में महिलाओं की भूमिका,* बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय, पटना, 2012, पृ0 208
23. ओम प्रकाश प्रसाद, *भारत का स्वतंत्रता संघर्ष,* पृ0 88.
24. महिला चर्खा समिति पत्रिका, रजत जयंती अंक, पृ0 13–15.
25. 'द सर्चलाइट; 30 दिसम्बर, 1931, पृ0 5.
26. डॉ0 श्वेता, पूर्वोक्त, पृ0 87.
27. शिवपूजन सहाय, *बिहार की महिलाएँ,* बिहार चरखा समिति, पटना, पृ0 347.
28. वही, पृ0 343–344.